पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

(दिनांक: 25.09.2020)

कृषिवानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य
RESEARCH AND INNOVATION SCENARIO IN AGROFORESTRY

मानव जीवन के लिए संतुलित पर्यावरण आवश्यक है। वनों की कटाई, पानी की कमी विभिन्न कारकों द्वारा मृदा का क्षरण होने से पर्यावरण–संतुलन निरंतर बिगड़ता जा रहा है। इसके लिए आवश्यक है की ऐसी कृषि पद्धति अपनायी जाए जिससे खाद्यान्न, लकड़ी व चारा इत्यादि की पूर्ति भी हो जाए और पर्यावरण का संतुलन भी बना रहे। उपरोक्त संदर्भ में कृषि–वानिकी की महत्ता वर्तमान समय में काफी बढ़ गयी है। इसके द्वारा भूमि की उर्वरा क्षमता बढ़ायी जा सकती है, भूमि से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है, पर्यावरण संतुलन बनाए रखा जा सकता है, ईंधन एवं इमारती लकड़ी प्राप्त की जा सकती है, बंजर भूमि का सुधार किया जा सकता है व पशुओं को वर्ष भर हरा चारा मिल सकता है। वृक्ष ग्रीष्म ऋतु में भूमि का तापमान बढ़ने से रोकते हैं, जिससे भूमि में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं को नष्ट होने बचाया जा सकता है, जो हमारी फसलों के लिए लाभकारी होते हैं। वृक्ष अपनी लम्बी व गहरी जड़ों के द्वारा भूमि की निचली सतह से पोषक तत्वों को ग्रहण करके, भूमि की ऊपरी सतह पर लाने में मदद करते है। कृषि–वानिकी एक अत्यंत पर्यावरणरक्षी विद्या ही नहीं अपितु वर्तमान समय की माँग है। पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ फसलों एवं बहुवर्षीय पौधों को उगाकर खाद्य एवं लकड़ी की आपूर्ति विभिन्न प्रकार से पूरी की जा रही है। इसमें कृषि और वानिकी की तकनीकों का मिश्रण करके विविधतापूर्ण, लाभप्रद, स्वस्थ एवं टिकाऊ भूमि–उपयोग सुनिश्चित किया जाता है। देश के वन क्षेत्र में वृद्धि का यह एक जीवंत विकल्प है। कृषि–वानिकी एक प्राकृतिक व परम्परागत पद्धति है, जिसमें वर्तमान समय में विभिन्न विधाओं में नवीनतम शोध की आवश्यकता है। हिन्दी भाषा में सामान्य जन तक कृषि वानिकी का प्रचार–प्रसार इस शोध संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य है।

विषय वस्तु

- *कृषि वानिकी में शोध के नवीन आयाम*
- *कृषि वानिकी द्वारा वन क्षेत्र के बाहर वृक्षों का क्षेत्र बढ़ाना*
- *कृषि वानिकी वृक्षों का प्रबंधन*
- *कृषि वानिकी द्वारा उत्पादनशीलता में वृद्धि*
- *कृषि वानिकी उत्पादों का रख–रखाव तथा विपणन*

लगभग 250–300 शब्दों में सार (Abstract) anitatomar@gmail.com अथवा anubhasri_csfer@icfre.org पर ई–मेल के माध्यम से भेजा जा सकता है।
चयनित प्रस्तुतकर्ताओं को सूचित किया जाएगा और ऑनलाइन कार्यक्रम के लिए लिंक भेजा जाएगा।

समन्वयक
डॉ अनीता तोमर
वैज्ञानिक–ई

आयोजन सचिव
डॉ अनुभा श्रीवास्तव
वैज्ञानिक–सी

सार प्रस्तुतीकरण की अंतिम तिथि: 15 सितम्बर, 2020

सार स्वीकृति की सूचना तिथि: 20 सितम्बर, 2020